THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

केवल शादी ही न करें – शादी को दें भी

Author – Beverly Bemis Hawks DeWindt

Spirituality.com April. 01, 2006

शादियों के लिए गर्मियाँ एक महत्त्वपूर्ण ऋतु है! स्वयं शादीशुदा होने के नाते (हमारी शादी अगस्त की थी), मैं उन आनन्दों को जानती हूँ जो शादी प्रदान करती है। इस रास्ते पर मैंने कुछ सबक भी सीखे।

क्या आप जानते हो कि मैंने शादी के बारे में क्या जाना? शादी ''करने'' से कई बड़ा आनन्द शादी को ''देने'' में है। मेरे ख्याल से शादी के सबसे अच्छे भागों में से एक यह था कि मैं सद्भावना में विकास को जारी रखना चाहती थी क्योंकि मैं अपने पति बिल से बहुत प्रेम करती थी, ताकि मैं सदा वैसी पत्नी बनी रह सकूँ जिसे वह प्रेम करता था और जिसकी वह इच्छा रखता था। हांलाकि वह कई वर्ष पहले गुज़र गया, मैं अब भी स्वयं में सद्भावना को खोजने के तथा परमेश्वर की कृपा को अनुभव करने के अवसरों में आनन्द मनाती हूँ

मैंने सद्भावना के बारे में बाइबल पढ़ कर सीखा है, जो कि सलाह देती है, '' क्योंकि यह अच्छी बात है कि हृदय सद्भावना में बना रहे।''

परन्तु बाइबल तथा सद्भावना की मेरी आध्यात्मिक समझ, मेरी बेकर एडी की पुस्तक साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू दॅ स्क्रिपचर्स द्वारा बहुत बढ़ गई। उसने लिखा, '' हमें सबसे अधिक ज़रूरत उस प्रार्थना की है जो हमें सद्भावना में विकास की तीव्र इच्छा दे, जो धैर्य, विनम्रता, प्रेम तथा अच्छे कार्यों में अभिव्यक्त हो।

मैंने प्रेम तथा अच्छे कार्यों को करना बहुत कठिन नहीं पाया।

मैंने ''प्रेम तथा अच्छे कार्यों'' को करना कभी भी कठिन नहीं पाया, लेकिन कई बार धैर्य–तथा विनम्रता को भी अभिव्यक्त करने के लिए मुझे संघर्ष करना पड़ा। फिर भी मुझे लगता है कि अधिकतम समय मैं इन गुणों को अभिव्यक्त करने में सफल रही।

जब मेरा होने वाला पति और मैं शादी की योजना बना रहे थे, मैंने उस से कहा कि शायद हमें अन्य युवा चर्च सदस्यों के साथ मेलमिलाप रखना अच्छा लगे, जो नृत्यों को सम्मिलित करते हुए सामाजिक कार्यक्रमों मे इक्ट्ठे होते थे। परन्तु बिल की उस विचार में कोई भी दिलचस्पी नहीं थी।

** जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

लगता था हमें अपने घर से प्यार था। मेरे लिए सबसे अच्छा यह था कि, बिल मेरे नन्हे बेटे को बहुत प्रिय था, जिसका अपना पिता जीवित नहीं था।

एक साथ आनन्दमयी क्रियाओं के लिए,–तथा सद्भावना में विकास के लिए कई अवसर थे। फलस्वरूप, मेरी प्राथमिकताओं की सूची में नृत्य बहुत नीचे चला गया था।

निश्चित रूप से मुझे पता चल गया कि शादी में किसी को सब कुछ अपने तरीके का नहीं मिलता। न ही हमारा जीवनसाथी हमेशा बिलकुल वही कहेगा या करेगा जो भी हम चुनें या जिसकी भी हम इच्छा करें। यकीनन, हर कोई एक अलग व्यक्तित्व है, जिसका अनुभव और अतीत हम से अलग है।

सद्भावना में विकास ने मुझे मेरे पति को आध्यात्मिक रूप से देखने के योग्य बनाया।

यही है जिसने सद्भावना मे विकास को महत्त्वपूर्ण बना दिया–इसने मुझसे **परमेश्वर** को बेहतर समझने की मांग की तथा बिल को आध्यात्मिक देखने की, **परमेश्वर** के गुणों की अभिव्यक्ति की तरह।

जैसे ही इस आध्यात्मिक तरीके में मेरी निष्ठा बढ़ी, मैंने सीखा कि महत्त्वपूर्ण चीज़ों को महत्त्वहीन न बनाऊँ; मैंने यह भी सीखा कि महत्त्वहीन चीज़ो को महत्त्वपूर्ण न बनाऊँ। इस तरह, हमने अपने अनुभव में समन्वय तथा आनन्द को सम्मिलित करना जारी रखा। एक सालगिरह के कार्ड में बहुत ही सार्थक तथा अनमोल संदेश था, जिसने हमारे जीवन का वर्णन किया: "प्रेम, वर्षों की गिनती करने का मुद्दा नहीं है। यह वर्षो को गिनने योग्य बनाना है।"

मैं सोचती हूँ कि बिल और मैं दोनों ही **परमेश्वर** से इतना प्रेम करते थे कि हमारे सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय **परमेश्वर** के हमारे प्रति प्रेम के दृष्टिकोण से लिए जाते थे। यह हमें केवल "प्रेमी होने से" बहुत आगे ले गया, उतना प्यारा जितना वो है। हम संतुष्ट थे, तथा कृतज्ञता स्वाभाविक रूप से एक घरेलू शब्द बन गया था। एक बार, जब वह मेरे लिए अपना प्रेम प्रकट कर रहा था, उसने कहा, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ क्योंकि तुम हमेशा साथ होती हो। तुम कितनी भरोसेमंद, विश्वसनीय, निष्ठावान हो।"

वह मेरे आध्यात्मिक गुणों की कद्र करता था।

मेरे आध्यात्मिक गुण जिनकी वह कद्र करता था, उन पर उसके ध्यान देने को मैं पसंद करती थी। उस तरह के प्रेम के साथ, एक अर्जित किया हुआ सम्मान होता है। और जो उतना ही ज़रूरी है कि, मैं भी उसके बारे में वही कह सकती थी। अपनी शादी में सद्भावना में हमारे व्यक्तिगत विकास के फलस्वरूप हम दोनों ने गहरी समझ प्राप्त की कि वास्तव में प्रेम है क्या।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

बेशक हमारी शादी में कभी कभी चुनौतियाँ भी आई। उदाहरण के लिए, जब हमारी चर्च के एगज़िक्यूटिव बोर्ड ने मुझे हमारे क्रिश्चियन साँयस रीडिंग रूम की लाइब्रेरियन बनने का अवसर दिया, मैं इस संभावना पर आनन्दित हो उठी। केवल एक ही समस्या थी कि हमें एक और गाड़ी खरीदनी पड़ती।

जब मैंने बिल से गाड़ी के अग्रिम भुगतान (down payment) के लिए पैसे उधार मांगे–जैसे अतीत में मैंने उसके लिए किया था–उसने मुझे एकदम मना कर दिया यह कहते हुए कि, "तुम्हें लाइब्रेरियन का पद स्वीकार करने की ज़रूरत नहीं है।" (साफ बात यह है कि मैंने तब पूछा जब हम सोने की तैयारी कर रहे थे–शायद वह बहुत अच्छा मौका नहीं था!)

"क्या तुम उससे फिर शादी करोगी?"

बिल की प्रतिक्रिया ने सचमुच मेरी भावनाओं को चोट पहुँचाई थी। फिर मैं पड़ोस में गाड़ी चलाने चली गई जब तक कि मैं शांत नहीं हो गई। जब मैं अन्धेरे में गाड़ी चला रही थी मेरे मन में यह प्रश्न आया: "यदि तुमने यहीं समाप्त करना होता, क्या तुम उससे फिर शादी करती?" मेरा उत्तर था, "यकीनन मैं करती।" अगला विचार था," तुम्हें वह मिल गया जो तुम्हें चाहिए था। तुम घर क्यों नहीं जाती हो और आधी रात को गाड़ी चलाना बंद क्यों नहीं करती हो?"

इस प्रकार मैंने घर की ओर बढ़ना शुरू किया यह उम्मीद करते हुए कि वह मेरे बारे में चिंतित होगा कि मैं बाहर अकेली हूँ। जब मैं पहुँच गई, मैंने पाया कि वह गहरी नींद में था–पूरी तरह से निश्चिन्त। मुझे हँसना पड़ा। मेरे साथ यह कैसा मज़ाक हुआ था!

क्या मैंने गाड़ी खरीदी और लाइब्रेरियन का स्थान ग्रहण किया? यकीनन मैंने यह किया–परन्तु मैंने अपनी माँ से पैसे उधार लिए और जल्द ही उन्हें वापिस लौटा दिए।

बिल और मैंने उस विषय पर फिर कभी चर्चा नहीं की। मेरी दृष्टि में सद्भावना में विकास कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण था, यह सोचने के बजाए कि मुझे उसे सीधा करना था। इसके बजाए, मैंने खुद को सही साबित करने से परहेज़ किया, जो कि मेरे सद्भावना में विकास में दखल दे सकता था–और मैंने पाया कि आध्यात्मिक विकास कहीं अधिक आवश्यक है।

यह मैं यकीनन जानती हूँ: कि हम दोनों समझते थे और विश्वास करते थे कि परेमश्वर प्रेम है साथ ही साथ समस्त बुद्धिमता का स्रोत भी। परमेश्वर उन गुणों को अपने हर एक विचार में अभिव्यक्त करता है, हमें सम्मिलित करते हुए।

हम दोनों ने शांति की कद्र की और झगड़े का चुनाव नहीं किया।

हम जानते थे कि झगड़ना बुद्धिमता नहीं है, तथा दिव्य प्रेम हमें यह करने से रोकने में सक्षम है। मैं यह भी जानती थी कि हम दोनों अपने घर में शांति की कद्र करते थे, तथा यह कि हम में से कोई भी झगड़े को नहीं चुनेगा। यह जानकर मै वंचित नहीं हुई, बल्कि इसने वह और अधिक बढ़ा दिया जो कि मुझे सबसे अधिक चाहिए था: सद्भावना में विकास।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

चाहे एक दिव्य चीज़ न सही, शादी एक प्यारा इन्सानी अनुभव हो सकता है, यदि हम इसे ऐसा बनाना चाहें तो। विवाह हो जाता है, परन्तु शादी वह है जिसे दो व्यक्ति ढालते हैं। तथा परिणाम स्वरूप चरित्र का उत्थान बहुत मुक्तिदायक होता है।

जैसा कि एक बार किसी ने कहा था, ''जितनी नज़दीक किरणें सूरज के होती हैं, उतनी ही वह एक दूसरे के करीब होती हैं,'' इसी मायने से शादी के सहभागी जितने दिव्य **प्रेम** के नज़दीक होते हैं उतने ही वे एक दूसरे के करीब होते हैं, क्योंकि वह **परमेश्वर**, अपने रचयिता के साथ अपनी एकता में जुड़े होते हैं।
जब वास्तव में शादी को समझा जाता है तथा उसकी कद्र की जाती है, आम तौर पर शादी समाज पर एक बहुत ही शुद्ध तथा स्थिर प्रभाव छोड़ती है तथा यह विवाहित या अविवाहित, सभी लोगों द्वारा अपने पक्ष में निरंतर प्रार्थना का अधिकार रखती है।

एक चीज़ जो कि शादी में स्वाभाविक शांति बनाए रखती है, वह इसे समझना है कि जब हम दिखाई देने वाली विरोधी विचारधाराओं का समाधान करते हैं – अधिकतम किसी बेकार मुद्दे के बारे में – हम वास्तव में शादी की संस्था को सुदृढ़ कर रहे होते हैं।

एक अच्छी शादी में शांति तथा एकता की ज़रूरत होती है।

अक्सर, असहमति इससे पनपती है जैसा कि प्रेरित पॉल ने उल्लेख किया जब यह कहा, ''भौतिक मन परमेश्वर से शत्रुता करता है।'' यह भौतिक मन हम पर प्रभाव डालने की कोशिश करता है, शांति, अच्छाई, तथा एकता के खिलाफ, जिन गुणों की शादी और समाज में ज़रूरत हैं परन्तु जैसे ही जोड़े इस प्रभाव का विरोध करने के लिए मिल कर कार्य करते हैं, उनके जीवन दूसरों के लिए उदाहरण तथा प्रोत्साहित करने वाले बन जाते हैं।

जब बच्चे अपने माता – पिता को एक साथ हर चीज़ के लिए विनम्रता तथा इमानदारी से प्रार्थना करते हुए देखते हैं, जो कुछ चल रहा है उसकी प्रेरणा को आत्मसात करते हैं तथा स्वयं की भी वैसी ही शादी की कामना करते हैं, जो कि उनके माता – पिता द्वारा प्रकट किए गए गुणों को व्यक्त करे। आने वाली पीढ़ियों के लिए कितना ही श्रेष्ठ और जानदार उदाहरण है!

दोनों सहभागियों के लिए **परमेश्वर** के प्रेम द्वारा देखभाल करना, ध्यान देना, सहमति देना तथा सहयोग देना कठिन चुनौतियों का हल ढूंढने के लिए भी स्वाभाविक बन जाता है।

दिव्य **प्रेम** अनंत **मन** भी है, बुद्धिमता, शांति तथा समन्वय का स्रोत – तथा यह और अन्य आध्यात्मिक गुण सदा उपस्थित होते हैं क्योंकि **परमेश्वर** कभी हमारा त्याग नहीं करता। इस प्रकार, खुशी या सामर्थ्य या जो हम सोचते हैं कि हमारे पास नहीं है उसे पाने के लिए हम अपने जीवनसाथी पर निर्भर नहीं हैं।

जैसे ही हम पहचानते हैं कि हमारा सच्चा, स्थायी व्यक्तित्व **परमेश्वर** के साथ हमारे रिश्ते में है, हम शादी में अधिक खुशी, अधिक सामर्थ्य, अच्छाई की अधिक पूर्ति ला पाएंगे।
फिर प्रस्ताव की चमक, विवाह की खुशी, एक साथ घर में रहना, विवाह की घँटियों की ध्वनि की मधुरता को कभी कम नहीं होने देता। वास्तव में, शादी बेहतर और बेहतर हो जाती है जब वह गहरी और गहरी होती जाती है। क्यों? क्योंकि सद्भावना तथा प्रगति का हर एक वर्ष गिनने योग्य होता है।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.